



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

### असाधारण

### EXTRAORDINARY

#### भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

#### PART II—Section 3—Sub-section (i)

#### प्राधिकार से प्रकाशित

#### PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 297]

नई दिल्ली, सोमवार, अक्टूबर ९, १९७८/अश्विन १७, १९००

No. 297]

NEW DELHI, MONDAY, OCTOBER 9, 1978/ASVINA 17, 1900

इस भाग में निम्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोवृहन और परिवृहन मंत्रालय

प्रस्तर्वेशीय जल परिवृहन निवेशालय

प्रधिसूचना

नई दिल्ली, ६ अक्टूबर, १९७८

सांकेति० ४९५ (भ).—केन्द्रीय सरकार, अन्तर्वेशीय जलयान अधिनियम, १९१७ (१९१७ का १) की धारा ५४ के साथ पठित मोटर यान अधिनियम, १९३९ (१९३९ का ४) की धारा १११ द्वारा प्रवृत्त अधिकारियों का प्रयोग करते हुए कातपय नियम बनाना चाहती है। जैसा कि उक्त प्रथम अधिनियम की धारा ७४ में दर्शित है, प्रस्तावित नियमों का निम्नलिखित प्रारूप उन सभी अधिकारियों की जामकारी के लिये प्रकाशित किया जा रहा है, जिनके उससे प्रभावित होने की सम्भावना है। इसके द्वारा सूचना वी जाती है कि उक्त प्रारूप पर राजपत्र में इस प्रधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से पैंतालिस विम की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जायेगा।

उपरोक्त अवधि की समाप्ति के पूर्व उक्त प्रारूप की धावत जो भी आवेदन या सुझाव किसी व्यक्ति से प्राप्त होगे, केन्द्रीय सरकार उन पर विचार करेगी।

नियमों का प्रारूप

भाग-१

१. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ—इन नियमों का संक्षिप्त नाम प्रस्तर्वेशीय मंत्र नोवित जलयान (पर अधिक वीमा) नियम, १९७८ है।

(2) इन नियमों का विस्तार जम्हूरी काश्मीर राज्य के सिवाय समस्त भारत पर है।

(3) ये नियम १ दिसम्बर, १९७८ को प्रवृत्त होंगे।

२. परिभाषाएँ—इन नियमों में, जब तक संदर्भ से प्रत्यया प्रवैक्षित न हो, —

(1) “लेखा वर्ष” से प्रथम अप्रैल से प्रारम्भ होने वाला और आगामी वर्ष की ३१ मार्च को समाप्त होने वाला वर्ष अधिप्रेत है;

(2) “अधिनियम” से भारतीय जलयान अधिनियम, १९१७ (१९१७ का १) अधिप्रेत है;

(3) “प्राधिकारी” से अधिप्रेत है केन्द्रीय सरकार या कोई राज्य सरकार या स्थानीय प्राधिकारी या प्रस्तर्वेशीय जल परिवृहन सेवा की व्यवस्था करने वाला राज्य जल परिवृहन उपकरण, जहाँ ऐसा उपकरण निम्नलिखित द्वारा बलाया जा रहा हो —

(i) केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार; या

(ii) कोई स्थानीय प्राधिकारी या केन्द्रीय सरकार या एक अवैध अधिक राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार और एक या अधिक राज्य सरकार, के स्वामित्वाधीन कोई नियम या कानूनी, जिसके यंत्र नोवित अन्तर्वेशीय जलयान, मोटर जलयान अधिनियम, १९३९ की धारा १११ की उपशाय (३) के प्रधीन बीमा पालिसी से छूट प्राप्त है;

(4) "बैंक" से भ्रमित्रेत है वह कम्पनी जो उधार देने या विनियाम के प्रयोजनार्थ ऐसे उन नियमों जनता से स्वीकार करती है जो, मांग पर या अन्यथा प्रतिवेद्य है और जैक, मानवेय, आदेश या अस्थिर निकाले जा सकते हैं;

(5) "निधि" से नियम 15 के अधीन स्थापित निधि भ्रमित्रेत है;

(6) "सरकारी प्रतिभूति" से सोक छण अधिनियम, 1944 (1944 का 18) में यथापरिभाषित सरकारी प्रतिभूति भ्रमित्रेत है।

(7) "बीमा कर्ता" से अन्तर्वेशीय जलयात्रा अधिनियम, 1917 (1917 का 1) की धारा 54ग द्वारा अनुपालन गए भोटराम अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 93 के छण (क) में यथापरिभाषित प्राधिकृत बीमाकर्ता भ्रमित्रेत है।

(8) "पालिसी" से यह सोक अन्तर्वेशीय जलयात्रों के उपयोग से उत्पन्न होने वाले पर-ज्युक्त जीविमों की बाबत ऐसी बीमा की पालिसी भ्रमित्रेत है जो अधिनियम के अन्याय 6 की अपेक्षाओं का अनुपालन करती है और उसमें आवरक टिप्पण (कवर नोट) भी सम्मिलित है।

3. बीमा प्रमाण-पत्र:—बीमाकर्ता, अपने द्वारा जारी किए गए आवरक टिप्पण से भिन्न किसी पालिसी के प्रत्येक धारक को नियमित्वित कराएगा:—

(क) किसी विनियिष्ट जलयात्रा या विनियिष्ट जलयात्रों से संबंधित किसी पालिसी की दशा में ऐसे प्रत्येक जलयात्रा की बाबत, इन नियमों की अनुसूची में विए गए प्रकृत क में बीमा प्रमाण-पत्र है।

(ब) ऐसी पालिसी की दशा में जो किसी विनियिष्ट जलयात्रा या जलयात्रों से संबंधित न हो, इन नियमों की अनुसूची में विए गए प्रकृत क में उतने प्रमाण-पत्र, जितने भोटर जलयात्रा अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 106 की ओर इन नियमों की अपेक्षाओं के अनुपालन को सुनियुक्त करने के लिए आवश्यक हों और जो यह साक्ष देश किए जाने से संबंधित हों, कि भोटर यान अधिनियम की धारा 94 के उल्लंघन में यह सोक अन्तर्वेशीय जलयात्रा नहीं चलाए जा रहे हैं।

4. आवरक टिप्पण:—(1) किसी बीमा कर्ता द्वारा आवरक टिप्पण के रूप में जारी की गई प्रत्येक पालिसी, इन नियमों की अनुसूची में दिए गए प्रकृत क में होगी।

(2) उपनियम (1) में नियिष्ट आवरक-टिप्पण, जारी किए जाने की तारीख से पन्द्रह दिन की अवधि के लिए विभिन्नात्मक होगा। यदि किसी कारणवश, बीमाकर्ता उस अवधि के बायान कोई पालिसी जारी करने में समर्थ नहीं है तो उस प्रावरण टिप्पण की विभिन्नात्मक एक समय में पन्द्रह दिन की ओर अवधि के लिए बड़ा थी जाएगी किन्तु किसी भी दशा में आवरक टिप्पण की विभिन्नात्मक की कुल अवधि दो भास से अधिक नहीं होगी।

5. प्रमाण-पत्रों और आवश्यक टिप्पणों का जारी किया जाना:—

(1) बीमाकर्ता द्वारा इन नियमों के अनुपालन में जारी किया गया प्रत्येक बीमा प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण उस बीमाकर्ता द्वारा जिसने उसे जारी किया है या उसकी ओर से सम्बन्धित प्रमाण-पत्र की विभिन्नात्मक होगा।

(2) पूर्वोक्त बीमा-प्रमाण-पत्र—

(क) उन पालिसियों की दशा में, जो 1 दिसम्बर, 1978 को प्रवृत्त हैं, उस तारीख को या उससे पूर्व,

(ख) अस्य किसी दशा में उस तारीख को या उससे पूर्व जिसको पालिसी जारी या नवीकृत की गई हो; जारी किया जाएगा।

6. विज्ञापन सामग्री का प्रपञ्चजन:—इस अधिनियम के प्राप्त्याय 6-क के अनुसरण में जारी किए गए किसी बीमा प्रमाण पत्र या प्रावरण टिप्पण में, मुख्यपृष्ठ पर या उसके पीछे कोई विज्ञापन सामग्री समाविष्ट नहीं थी जाएगी:

परन्तु उस बीमाकर्ता का नाम और पता, जिसके द्वारा प्रमाण-पत्र जारी किया गया है या बीमाकर्ता की भूमा की प्रतिहृति या बीमाकर्ता का सामिल्लू या बैंकी ही कोई मुक्ति या किसी बीमा अधिकृति या दलाल के नाम और पते को, यदि वह उस प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण के पाव पर या पीछे युक्ति या स्टापित हो तो, इस नियम के प्रयोजनार्थ विज्ञापन सामग्री नहीं समाप्त जाएगा।

7. गुम, नष्ट या विकृत प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण:—

(1) नियम 5 के उपनियम (2) में किसी बात के होते हुए भी, जहां पालिसीधारक;

(क) बीमाकर्ता के पास एक बोधाना शाखिल करता है जिसमें वह यह भीषित करता है कि उस बीमाकर्ता द्वारा उसे जारी किया गया बीमा प्रमाण-पत्र या प्रावरण टिप्पण गुम या नष्ट हो गया है प्रौद्योगिकता या प्रावरण टिप्पण के गुम या नष्ट होने से संबंधित सभी परिस्थितियों और उसे पाने के लिए किए गए प्रयासों का पूरा ध्यौरा देता है; या

(ख) या उस बीमाकर्ता द्वारा उसे जारी किया गया बीमा-प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण, विरूपित या विकृत दशा में उसे बापिल करता है; और

(ग) ऐसे प्रत्येक प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण की बाबत बीमाकर्ता को 3 या 5 फीस देता है:

तो बीमाकर्ता, यदि युक्तियुक्त रूप में उसका समाधान हो जाए कि वह प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण गुम हो भया है और उसे कोई जाने के सभी युक्तियुक्त प्रयास किए गए हैं या, यथास्थिति, वह नष्ट या विरूपित या विकृत हो गया है, उसके बदले में दूसरा बीमा प्रमाण-पत्र या प्रावरण टिप्पण जारी करेगा जिस पर इस आवश्यक का स्पष्ट पृष्ठांकन होगा कि वह भूल के स्थान पर जारी प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण की दूसरी प्रति है।

(2) जब इस अस्याबेन पर कि प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण गुम हो गया है, उप-नियम (1) के उपबंधों के अनुसार तथा प्रमाण-पत्र या आवरक-टिप्पण जारी किया गया है और बाव भूल प्रमाण-पत्र या आवरक-टिप्पण जारी की प्रति जाता है तो वह बीमाकर्ता की परिवर्त किया जाएगा।

8. प्रमाण-पत्र या आवरक टिप्पण का अस्यार्थ:—मौटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 104 की उप-जारा (1) के उपबंधों के अनुसार में अस्यार्थित किए गए प्रत्येक बीमा प्रमाण-पत्र या आवरक-टिप्पण, बीमाकर्ता द्वारा इन नियमों के नियम 10 के अनुसार में रखे गये अभिलेखों में विरूपण या उनके नष्ट किए जाने की बाबत सेक्वेन्च करने के प्रवात तुरन्त विरूपित या नष्ट कर दिया जाएगा।

9. प्रमाण-पत्र या आवरक-टिप्पण का रद्दकरण या निलम्बन: जब कोई बीमा पालिसी या आवरक टिप्पण किसी बीमाकर्ता द्वारा रद्द या निलम्बित कर दिया जाता है तब बीमाकर्ता, उस रद्दकरण या निलम्बन की बाबत

पालिसीधारक को तुररत, बीमाकर्ता के भ्रमिलिखित पालिसी-धारक के अन्तिम पते पर बारा द्वारा, सूचित करेगा।

10. बीमाकर्ताओं द्वारा रखे जाने वाले भ्रमिलेख :—प्रत्येक बीमाकर्ता, भ्रमने द्वारा जारी की गई प्रत्येक पालिसी, जो प्रवृत्त है और पिछले पांच वर्षों के दौरान उसके द्वारा जारी की गई प्रत्येक अन्य पालिसी की बाबत निम्नलिखित विविधियों का भ्रमिलेख रखेगा :—

- (1) उस अवक्त का नाम और पता जिसे पालिसी जारी की गई है;
- (2) किसी विनिविष्ट यंत्र नोटिव अन्तर्वेशीय जलयान या जलयानों से संबंधित पालिसी की बधा में, ऐसे प्रत्येक जलयान का रजिस्ट्री-करण चिह्न और संख्या, तथा अन्य दशाओं में, उसके प्राप्तर्गत ज्ञाने वाले जलयानों का वर्णन;
- (3) वह तारीख जिसको पालिसी प्रवृत्त होती है या प्रवृत्त हुई और वह तारीख जिसको वह समाप्त होती है या समाप्त हुई;
- (4) वे शर्तें, जिनके प्रधीन रहते हुए, पालिसी में विनिविष्ट व्यक्तियों या व्यक्तियों के दबावों की क्षतिपूर्ति की जाएगी;
- (5) पालिसी के सम्बन्ध में जारी किए गए प्रत्येक बीमा प्रमाणपत्र या आवारक टिप्पण की संख्या और उसके जारी किए जाने की तारीख;
- (6) तारीख, यदि कोई हो, जिसको पालिसी के संबंध में जारी किया गया बीमा प्रमाणपत्र या आवारक टिप्पण, अध्यर्थित या रद्द किया गया था;
- (7) तारीख, यदि कोई हो, जिसको और वे कारण जिस्ते पालिसी समय के समाप्तवाह के साथ समाप्ति से पूर्व किसी भी प्रकार समाप्त या निलम्बित की गई थी।

11. छूट :—मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 94 की उपधारा (3) के प्रधीन छूट प्राप्त या उपधारा (2) में विनिविष्ट प्राधिकारियों में से किसी के स्वामित्वाधीन के यंत्र नोटिव अन्तर्वेशीय जलयान की बधा में, इन नियमों की अनुसूची में दिए गए प्रस्तुप ग में जिस पर ऐसे प्राधिकारी द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत व्यक्ति के हस्ताक्षर होंगे एक प्रमाणपत्र इस संक्षेप के रूप में मैं पेश किया जा सकता कि यंत्र नोटिव अन्तर्वेशीय जलयान मोटरयान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 94 के उल्लेखन में नहीं जल्दा जा रहा है।

(2) इस नियम के उपनियम (1) के प्रनुसार जारी किया गया प्रमाण-पत्र, यंत्र नोटिव उन जलयानों का जिससे कि वह प्रमाणपत्र संबंधित है, विक्रय किए जाने से अस्थिरता व्ययन किए जाने से पूर्व उस व्यक्ति द्वारा, जिसके द्वारा यह जारी किया गया था, नष्ट कर दिया जाएगा।

12. छूटप्राप्त जलयानों के भ्रमिलेख :—मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 94 की उपधारा (3) के प्रधीन छूटप्राप्त या उपधारा (2) में विनिविष्ट प्रत्येक प्राधिकारी, भ्रमने स्वामित्वाधीन के यंत्र नोटिव उन जलयानों का, जिनकी बाबत पालिसी भ्रमिप्राप्त नहीं की गई है, और उन यानों की बाबत इस उपर्योगों के प्रधीन भ्रमने द्वारा जारी किए गए किन्हीं प्रमाणपत्रों का तथा उन व्यक्तियों के, जिन्हें उसके द्वारा ये प्रमाणपत्र जारी किए गए हैं, भास और पतों और ऐसे किन्हीं प्रमाणपत्रों के बापस लिए जाने से नष्ट किए जाने का भ्रमिलेख रखेगा।

13. सूचना का प्रदाय :—इन नियमों द्वारा घोषित वस्तवियों के भ्रमिलेख रखने वाला कोई व्यक्ति, प्राधिकारी या बीमाकर्ता, केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या राज्य सरकार द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी पुलिस प्रधिकारी को प्रमुख किए जाने पर उसकी कोई भी विनिविष्ट निवृत्त देगा।

14. सूचना प्रस्तुत करने के लिए फीस :—मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 109 के प्रधीन रजिस्ट्रीकरण प्राधिकारी या पुलिस याने के प्रधारी प्रधिकारी द्वारा सूचना प्रस्तुत किए जाने के लिए देय फीस एक रुपया है।

#### भाग-2 प्राधिकारियों द्वारा निधि की स्थापना

15. निधि की स्थापना :—प्राधिकारी, किसी भी समय, उस प्राधिकारी के लिए किसी यंत्र नोटिव प्रन्तदर्शीय जलयान के उपयोग से उद्भूत होने वाले किसी व्यक्तिव्य के लिए जो उस प्राधिकारी या उसके नियोजन में किसी व्यक्ति द्वारा पर-व्यक्ति के प्रति उद्भूत हो जिसमें कर्मकार प्रतिकार प्रधिनियम, 1923 के अधीन उद्भूत होने वाला व्यापित सम्बिलित है, एक निधि की स्थापना करेगा।

16. निधि की रकम :—(1) निधि, कम-से-कम पांच लाख रुपए की प्रारंभिक रकम से स्थापित की जाएगी। यह रकम बैंक में जमा कर दी जाएगी।

(2) उपनियम (3) के उपर्योगों के प्रधीन रहते हुए प्राधिकारी, आल हालत में यंत्र नोटिव प्रन्तदर्शीय जलयानों की बाबत प्रत्येक लेखा वर्ष के प्रारंभ में, प्रति जलयान 500 हॉ का निधि में संदाय करेगा।

स्पष्टीकरण—इस उपनियम में, “बासु हालत में यंत्र नोटिव प्रन्तदर्शीय जलयान” से प्राधिकारी के वे सभी यंत्र नोटिव प्रन्तदर्शीय जलयान भ्रमित्रेत हैं, जिनका कि उस लेखा वर्ष के दौरान किसी भी समय प्रचालन प्रस्तावित है।

(3) यदि निधि साठ साल लप्ये या यंत्र नोटिव प्रन्तदर्शीय जलयानों की संपूर्ण फ्लीट के लिए 7,500 हॉ प्रति यंत्र नोटिव प्रन्तदर्शीय जलयान, जो भी कम हो, से भ्रमित्र हो तो उपनियम (2) में निर्दिष्ट व्यापिक संबन्ध हो जायेगा, परन्तु यदि तत्पश्चात् निधि के जमा आते रकम, साठ लप्ये या यंत्र नोटिव प्रन्तदर्शीय जलयानों परी संपूर्ण फ्लीट के लिए प्रति वर्षीय जलयान 7,500 हॉ, जो भी कम हो, से कम हो जाए तो वह संदाय फिर से प्रारंभ कर दिया जाएगा।

17. निधि का विनियोग :—निधि के जमाजाते रकम में से प्रांत बैंक में कम वो लाख पचास हजार रुपये नकद जमा रखेगा और रहेगा। निधि के जमाजाते शेष रकम सरकारी प्रतिभूतियों में विनियुक्त जाएगी।

18. निधि में निषेप के रूप में घृत प्रतिभूतियाः—(1) सभी सरकारी प्रतिभूतियों जिनमें वह निधि विनियुक्त की गई है, प्राधिकारी द्वारा बैंक को प्रतिरक्षित कर दी जाएगी।

(2) प्राधिकारी किसी भी समय, सरकारी प्रतिभूतियों को नकदी के रूप में या बराबर या भ्रमिक विवरण मूल्य की अन्य सरकारी प्रतिभूतियों या दोनों, से उपनियम करने के लिए सक्षम होगा और बैंक प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए प्रन्तदर्शीयों का प्राधिकारी से प्रायिक कमीशन प्रभारित करने के पश्चात् पालन करेगा। इस प्रकार विनियम की गई प्रतिभूतियां भी बैंक को प्रतिरक्षित कर दी जाएंगी।

19. निषेप प्रक्रिया :—(1) जैसे ही निधि स्थापित होती है, बैंक, प्राधिकारी को, उसके निमित्त घपने द्वारा घृत प्रास्तियों को विनिविष्ट करते हुए एक विवरण भेजेगा और उसकी एक प्रति, यथार्थता, केन्द्रीय सरकार के नोबहन और परिवहन मंत्रालय (प्रन्तदर्शीय जल परिवहन निदेशालय) या संबद्ध राज्य सरकार को भेजेगा।

(2) जब भी बैंक द्वारा घृत प्राधिकारियों की प्राप्तियों में कोई परिवर्तन हो तब उपनियम (1) में निर्दिष्ट विवरण, उसी रीति से और उन्हीं प्राधिकारियों को भेजा जायेगा।

20. निधि में निषेप पर व्याज :—निधि में धूत प्रत्येक निषेप या प्रतिभूति पर बदूल किया गया व्याज वैकं द्वारा प्राधिकारी को देया जाएगा।

21. निधि में से धन निकालना :—(1) प्राधिकारी के किसी यंत्र नोवित जलयान के उपयोग से उद्भूत होने वाले किसी वायिक को पूरा करने के सिवाय, जो वह प्राधिकारी या उसके नियोजन में कोई व्यक्ति पर व्यक्ति प्रति उद्भूत करे जिसमें कर्मकार प्रतिकर प्रविनियम 1923 के अधीन उद्भूत होने वाला वायिक सम्मिलित है, निधि में से कोई रकम नहीं निकाली जाएगी।

(2) प्राधिकारी, उन शर्तों और नियन्त्रणों जो के अधीन रहते हुए वह इस निमित्त अधिरोपित करे, उपनियम (1) में वर्णित उद्देश्य के लिए निधि में से धन लेने के लिए अपने किसी अधिकारी को प्राधिकृत करेगा।

(3) उपनियम (2) में निर्दिष्ट प्राधिकारी की प्राधिकारी के किसी सक्रम अधिकारी द्वारा सम्पत्ति: प्राधिकारी प्रतिभूति एक प्रांत बैंक को भेजी जाएगी जो, उसमें वी गई शर्तों और नियन्त्रणों के अधीन रहते हुए, प्राधिकार में निमित्त अधिकारी को ही धन निकालने के लिए प्रनुकात करेगा।

22. दावों को क्षय करने की प्रक्रिया :—प्राधिकारी उन दावों को, जो इस निधि में से पूरे किए जाने हैं, तथ करने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया की बाबत, यथास्थिति केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले नियंत्रणों का पालन करेगा।

#### भाग 3-सहकारी बीमा

16. परिभाषाएँ :—इन नियमों के इस भाग में,—

(1) “भनुमोदित प्रतिभूतियों” से बीमा अधिनियम, 1938 की द्वारा 2 की उपधारा (3) में यथापरिमाणित भनुमोदित प्रतिभूतियों प्रभिप्रेत हैं;

(2) “बीमा नियंत्रक” से वह व्यक्ति भनुमोदित है जो बीमा अधिनियम, 1938 के उपबंधों के अधीन तत्समय बीमा नियंत्रक के कृत्य कर रहा है;

(3) “नियंत्रक प्राधिकारी” से सोसाइटी के संबंध में वह प्राधिकारी भनुमोदित है जिसकी प्रभिरक्षा में;

(4) “सोसाइटी” से अन्तर्देशीय जलयान स्वामियों की वह सोसाइटी भनुमोदित है जिसे अधिनियम के प्रयोगनार्थ बीमाकर्ता का कारबार करने के लिए, अन्तर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1) की धारा 54 ग द्वारा अपनाए गए मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अधीन स्थापित निधि रखी जानी है।

मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अधीन स्थापित निधि रखी जानी है।

24. सहकारी बीमा निधि :—मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के नियंत्रणों के अनुसार स्थापित की जाने के लिए प्रभेक्षित निधि या तो नकदी रूप में या भनुमोदित प्रतिभूतियों या अंशतः नकद और अंशतः भनुमोदित प्रतिभूतियों के रूप में रखे गए निषेप के रूप में धारित की जाएंगी और इस प्रकार धूत भनुमोदित प्रतिभूतियों की रकम, निषेप की तारीख प्रतिभूतियों के बाजार मूल्य पर प्राकलित की जाएगी।

परन्तु जहां बीमा अधिनियम, 1938 के प्रधीन धूत निषेप, इन नियमों के नियम 31 के अनुसार में धारक प्राधिकारी को, अंतरित किए जाते हैं थहां, इस प्रकार अंतरित भनुमोदित प्रतिभूतियों की व्यापा में, निषेप की तारीख उस अंतरण की तारीख समझी जाएगी।

25. निषेप :—प्रक्रिया—(1) निषेप सोसाइटी द्वारा प्रावश्यक पत्र के साथ धारक प्राधिकारी को भेजी जाएगी।

(2) प्रतिभूतियों, सोसाइटी द्वारा धारक प्राधिकारी को सम्पत्ति: अंतरित की जाएंगी।

(3) इस नियम के उपायम (1) के अधीन निषेप प्राप्त होने पर धारक प्राधिकारी निम्नलिखित भेजेगा :—

(क) प्ररूप व य में सोसाइटी को एक प्रमाणपत्र ;

(ख) राज्य सरकार द्वारा यथाविनिविष्ट प्राधिकारी को प्ररूप व य में एक विवरण :—

परन्तु यदि धारक प्राधिकारी का प्रतिभूतियों पर सोसाइटी के हक की विधिमान्यता की बाबत समाप्त हुआ है तो वह उन्हें इस अनुरोध के साथ सोसाइटी को लौटा सकता है कि पहले उन्हें नवीकृत किया जाए या हक को स्पष्ट रूप से प्राप्त करने के लिए यथावावश्यक अन्य उपाय किए जाएं।

(4) नकद किए गए निषेप को धारक प्राधिकारी द्वारा सोसाइटी के अमालाते धूत किया जाएगा और उस सीमा तक के सिवाय यदि कोई हो, जिस सक्ति इस नियम के उपनियम 6 के अधीन नकदी को प्रतिभूतियों में विनिहित किया गया है, और उस मामले में, जिसमें अधिनियम या इन नियमों के उपबंधों के अधीन सोसाइटी को धन नकद निषेप बापस किया जा सकेगा।

(5) सोसाइटी, किसी भी समय, धारक प्राधिकारी के पास इन नियमों के प्रधीन उसके द्वारा निषिक्षित किसी प्रतिभूति को या तो नकदी रूप में या अन्य भनुमोदित प्रतिभूतियों से या अंशतः नकदी रूप में या अन्य भनुमोदित प्रतिभूतियों के रूप में बदल सकती है, परन्तु यथास्थिति, वह नकदी प्रथम वर्तमान जाने के समय प्रतिवित बाजार मूल्य पर प्राकलित बैसी ही अन्य भनुमोदित प्रतिभूतियों का, मूल्य अधिकार उस मूल्य सहित नकदी, जब प्रतिभूतियों निषिक्षित की गई थी उस समय प्रतिवित बाजार वर्तमान पर प्राकलित प्रतिभूतियों के जो बदली गई थी मूल्य से कम न हो।

(6) धारक प्राधिकारी, यदि सोसाइटी ने ऐसा अनुरोध किया हो तो,—

(क) इन नियमों के अधीन धारक प्राधिकारी के पास उसके द्वारा निषिक्षित किसी भी प्रतिभूति को बेच देगा तथा उस विक्रय से प्राप्त नकदी को निषेप के रूप में रखेगा; या

(ख) अपने द्वारा नकदी के रूप में धूत समस्त निषेप को सोसाइटी द्वारा निषिक्षित प्रतिभूतियों के विक्रय या उनके परिपक्ष होने पर उसके द्वारा प्राप्त नकदी को पूर्णतः या भागतः सोसाइटी द्वारा विनिविष्ट भनुमोदित प्रतिभूतियों में विनिहित करेगा तथा उन प्रतिभूतियों को, जिनमें इस प्रकार विनिधान किया गया है निषेप के रूप में धारण करेगा तथा ऐसे विक्रय या विनिधान पर सामान्य कमीशन प्रभारित कर सकता है।

(7) जहां इस नियम का उपनियम (6) लागू होता है, वहां,—

(क) यदि, प्रतिभूतियों के विक्रय या उनकी परिपक्षता पर प्राप्त नकदी (प्रयम मामले में उद्भूत व्याज को छोड़कर) उस तारीख को जिसको वे प्रतिभूतियों धारक प्राधिकारी के पास निषिक्षित की गई थी, उसके बाजार मूल्य से कम रह जाती है तो सोसाइटी उस कमी को या तो नकदी के रूप में या जिस दिन ये निषिक्षित की

जाएं उस दिन के प्रतिमूर्तियों के बाजार मूल्य पर प्राक्कलित अनु-  
मोदित प्रतिमूर्तियों के, या भागतः मकबी के रूप में और भागत  
इस प्रकार प्राक्कलित अनुमोदित प्रतिमूर्तियों के, उस तारीखसे,  
जिसको प्रतिमूर्तियां परिपक्व दृष्टी धीरे बोली गई थीं, दो मास की  
अवधि के भीतर अतिरिक्त निशेष द्वारा पूरी करेगी, तथा जब तक  
वह ऐसा न करे, यह समझा जाएगा कि सोसाइटी भोटर्स्यान  
प्राधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा  
(1) के अंडे (क) के अधीन प्रधिरोपित शर्तों के मनुषालन में  
प्रसफल रही है; और

(ख) यदि, प्रतिभूतियों के विक्रय या उनकी परिपक्वता पर प्राप्त नक्की (प्रथम मामले में उद्भूत व्याज को छोड़कर) उस तारीख को जिसको वे प्रतिभूतियां धारक प्राधिकारी के पास निश्चिप्त की गई थीं उनके बाजार मूल्य से अधिक हो गई तो राज्य सरकार, यदि उसका समाधान हो जाए कि मोटरवान अधिनियम 1939 (1939 का 4) की आरा 108 की उपधारा (1) के बांद (क) के अधीन निश्चिप्त किए जाने के लिए अपेक्षित पूर्ण रकम निष्क्रेप में हैं तो, धारक प्राधिकारी को निदेश दें सकती है कि वह जितनी रकम अधिक है उसे लौटा दे।

26. निक्षेप के रूप में धूत प्रतिभूतियों पर व्याज :—(1) नकद निक्षेपों पर कोई व्याज संकेत नहीं किया जाएगा।

(2) मोटररान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 को उपधारा (1) के खंड (क) के अवैतन प्रौद्योगिकीयों के अधीन नियमित प्रतिष्ठानियों पर उद्यम और संप्रदीति कोई ब्याज सोसाइटी को, ब्याज की बस्ती के लिए प्रभारी सामान्य कमीशन की कटौती संवत् किया जाएगा।

(3) धारक प्राधिकारी, प्रतिभूतियों पर ब्याज या साभांश सोसाइटी को, प्रत्येक 100 रु. या उसके भाग पर पच्चीस पैसे की कटौती के पश्चात् सरकारी या बैंक मांगदेय द्वारा प्रतिलिप्त प्रेषित करेगा।

27. निष्क्रेप के स्वप्न में धृत परिपक्ष प्रतिभूतियाः—(1) जब कोई निष्क्रिय प्रतिभूति परिपक्ष होती है या ऐसी किसी प्रतिभूति पर कोई प्राय उत्स्थूत होनी बन्द हो जाती है तब धारक प्राप्तिकारी, सोसाइटी को सूचित करने के लिए आध्य नहीं होगा किन्तु सोसाइटी द्वारा लिखित रूप में की जाने वाली भाग के प्राप्त होने पर धारक प्राप्तिकारी, उस प्राप्ति के छह सप्ताह के भीतर, भुगतान मूल्य संभर्हत करेगा और यह रकम सोसाइटी के जमाखाते में रखेगा या सोसाइटी द्वारा विनियिष्ट प्रतिभूतियों में विनिहित करेगा।

(2) जब निशेप का प्रश्न या रकम, किसी पश्चात्यर्ती निष्क्रेप या किसी प्रतिस्थापन या नियम 18 के उपनियम (5) के अधीन संवाय या इन नियमों के नियम 18 के उपनियम (6) के अधीन किसी विक्रय या विनियान के कारण, प्रतिवर्तित किया जाता है तो धारक प्राधिकारी, धारक प्राधिकारी की अधियों में ऐसे परिवर्तन की प्रविष्टि से दो सप्ताह के भीतर इन नियमों के नियम 25 के उपनियम (3) में वर्णित प्रक्रिया का, और रीति से एक नया प्रमाणपत्र और एक नया विवरण भेजेगा।

28. निषेपों से संबंध :— (1) यथास्थिति, सोसाइटी, विधि के घनुसार कार्य कराने के घनुसार कार्य करने वाले परिसमापक या सक्षम अधिकारिता वाले न्यायालय से निषेपों से निकालना और संबंध तथा प्रतिशुलियों का कल्य, राज्य सरकार के लिखित घोषणा के बिना और धारक प्राधिकारी द्वारा लिखित भाग की प्राप्ति के बिना नहीं किया जायेगा तथा इस अधिनियम और इन नियमों के उपर्योगों के घनुसार किया जायगा

(2) भारक प्रांतिकारी, बस्तुतः त्रिभिन्न प्रतिमूर्तियों को उपनियम (1) के अनुसरण में लौटाने के लिए बाध्य नहीं होगा, किन्तु उनके स्थान पर उसी वर्णन और रकम की प्रतिमूर्तियों की नई स्टिक्ट रक्खा सकता है।

(3) धारक प्राधिकारी, प्रतिभूतियों के क्रय या विक्रय के लिए, ऐसे क्रम या विक्रय के धारक प्राधिकारी द्वारा देय दस्तावेज़ प्रभारित करने का हक्कदार होगा।

29. नियमों का निरीक्षण :—राष्ट्र सरकार द्वारा इस नियमित प्राधिकृत कोई प्राधिकारी बिना किसी फीस के मोटरयान प्रविनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उन्नधारा (1) के अंडे (क) तथा इन नियमों के नियंत्रणों के अनुसार धारक प्राधिकारी के पास नियमित किसी प्रतिसूति का निरीक्षण करने या उसकी बाबत धारक प्राधिकारी से किसी सूचना की घेतों करने का हकदार होगा और धारक प्राधिकारी, यदि ऐसी प्रवेशा की जाए जो उस प्राधिकारी को, इस प्रविनियम और इन नियमों के अनुसरण में उसके पास रखे गए किसी निक्षेप से संबंधित किसी रजिस्टर या बहु में की किसी प्रविष्टि की प्रति देगा।

30. रजिस्टर बैंक की सूचना:—जहां वह सोसाइटी, जिसे मोटर यान अधिनियम, १९३९ (१९३९ का ४) की धारा 108 की उपधारा (१) के प्रभीन, इस अधिनियम के प्रयोजनार्थ एक बीमाकर्ता का कारबाह इस प्रकार करने की भनुजा थी गई है मानों वह कोई प्राधिकृत बीमाकर्ता हो, ऐसी भनुजा अनुदल किए जाने के समय बीमा अधिनियम, १९३८ के प्रभीन रजिस्टर्ड कृत में ध्वनी राज्य सरकार ऐसी भनुजा के बिधे जाने की सूचना भारतीय रजिस्टर बैंक को देगी तथा उस सोसाइटी के संबंध में मोटर जलयान अधिनियम १९३९ (१९३९ का ४) की धारा 108 की उपधारा (१) के रूप (क) में निर्दिष्ट निषि की स्थापना से संबंधित राज्य सरकार द्वारा प्रधिरोपित सभी शर्तों की सूचना भी बैंक को देगी ।

31. रिजर्व बैंक से निक्षेप का स्थानात्मकण:— (1) यथापूर्वोक्त सौसाइटी बीमा अधिनियम 1938 की धारा 98 या धारा 7 के अधीन किए गए और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा धूत निक्षेप के धारक प्राप्तिकारी को स्थानात्मकण के लिए भारतीय रिजर्व बैंक को लिखित रूप में प्रावेदन देती तथा वह प्रावेदन सम्पत्ति: अधिरप्रमाणित होगा और उसके साथ राज्य सरकार का वह मूल प्रावेदन लगाया जाएगा जिसमें सौसाइटी की भौटिकायम अधिनियम 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा (1) के अधीन धनुक्षा दी गई हो तथा जिसमें भौटिकायम अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा (1) के बड़े (क) के अधीन राज्य सरकार द्वारा शाते शदि कोई हो, अधिरोपित की गई हो तथा बीमा नियंत्रक को उस प्रावेदन की अनुप्रमाणित और उसके संलग्न भी भेजे जाएंगे ।

(2) यदि इस प्रकार किए गए सावेदन से रिजर्व बैंक का समाधान हो जाता है कि सोसाइटी को, मोटर यान प्रधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा (1) के अधीन राज्य सरकार द्वारा बनुआ के दी गई है तो रिजर्व बैंक, राज्य सरकार द्वारा अधिरोपित की गई याती, यदि कोई हो, के अधीन रहते हुए, सोसाइटी के निमित्त, भीमा अधिनियम, 1938 की धारा 7 और धारा 99 के अधीन अपने द्वारा बूत निपेश को नियन्त्रक प्राप्तिकारी को अंतरित कर देगा ।

32. श्रीमा नियंत्रक की सूचना :—राज्य सरकार, श्रीमा नियंत्रक को, इस अधिनियम के प्रयोजनार्थ श्रीमा कर्त्ता का कारबाहर करने के लिए सोसाइटी की घटने द्वारा दी गई अनुकूला के प्रत्येक मामले और प्रत्येक उस मामले की सूचना देगा जहाँ वह अनुकूला वापस ले ली गई है या एह कर दी गई है तथा प्रत्येक उस मामले में जहाँ वह अनुकूला दे दी गई है, राज्य सरकार, श्रीमा नियंत्रक की, धारा 3 की उपधारा (2) के बांड (क), (ख) और (च) में निर्दिष्ट वस्तवावों की एक प्रति और उस सोसाइटी के संबंध में श्रीमा अधिनियम 1938 की धारा 26 में निर्दिष्ट ऐसी विशिष्टियाँ जो उस सोसाइटी को लागू हों, भेजेंगी ।

परन्तु उन सोसाइटी की दशा में जो, राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली अनुशा के समय बीमा अधिनियम, 1938 के अधीन रजिस्ट्रीड है, इस नियम की अपेक्षाओं का पर्याप्त अनुपालन तक समझा जाएगा यदि राज्य सरकार बीमा नियन्त्रक को, जिस तारीख की राज्य सरकार द्वारा सोसाइटी की अनुशा दी गई है उसके पश्चात् हीने वाले प्रत्येक परिवर्तन की बाबत, बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 26 में विनियिट विशिष्टियों के दें।

33. इस अधिनियम के उपबंधों का अनुपालन करने में सोसाइटी की अमफलता:—बीमा नियन्त्रक, सम्बद्ध राज्य सरकार की प्रत्येक उस मामले की सूचना देगा जिसे, सोसाइटी द्वारा उसे दी गयी विवरणियों के अवलोकन से उसकी यह राय हो कि सोसाइटी द्वारा मॉठर यात्रा अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उपधारा (1) के खंड (च) के उपबंध (i) या उपबंध (ii) या दोनों नियमों की अपेक्षाओं का अनुपालन करने में असफल रही है।

#### भाग 4—विवेशी बीमा

34. परिभावाएँ:—इन नियमों के इस भाग में—

- (i) "अनुमोदित सूची" से इन नियमों के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा दी जाने वाली विवेशी बीमाकर्ताओं और उनके गारण्टी-कर्ताओं की अनुसूची अभिप्रेत है।
- (ii) "विवेशी बीमा प्रमाणपत्र" से इन नियमों के अनुपालन में प्राप्त 'छ' में किसी विवेशी बीमाकर्ता द्वारा जारी किया गया प्रमाणपत्र अभिप्रेत है।
- (iii) "विवेशी बीमाकर्ता" से वह व्यक्ति या फर्म अभिप्रेत है जो, भारत से बाहर नियमित या अधिवासी है और वीमा का कारबार कर रहा है तथा बीमा अधिनियम, 1938 के अधीन रजिस्ट्रीड नहीं है।
- (iv) "गारण्टीकर्ता" से ऐसा बीमाकर्ता अभिप्रेत है जिसने इन नियमों के अनुसरण में किसी विवेशी बीमाकर्ता की गारण्टी दी ही, 'तथा' 'गारण्टी' 'गारण्टी शुल्क' और "गारण्टी देना" के तत्संबंधी फर्म है।
- (v) "भागन्तुक" से वह व्यक्ति अभिप्रेत है जो भारत में कोई अन्तर्देशीय अल्पानन ना रहा हो और वैसे वहां एक वर्ष से प्रवासिक की निरस्तर प्रवासिक तक प्रस्थायी रूप से रहता हो।

35. विवेशी बीमाकर्ताओं की सूची:—(1) केन्द्रीय सरकार उन विवेशी बीमाकर्ताओं की, जो इन नियमों के अनुसार गारण्टीशुल्क हैं, प्रत्येक मामले में गारण्टीकर्ता या गारण्टीकर्ताओं के नाम सहित, राजपत्र में एक अनुमोदित सूची प्रकाशित करेंगी तथा उस अनुमोदित सूची में जोड़े जाने वाले या उसमें से हटाए जाने वाले नामों की भी प्रकाशित करेंगी।

(2) किसी विवेशी बीमाकर्ता का नाम तब तक अनुमोदित सूची में नहीं जोड़ा जाएगा, जब तक कि वह विवेशी बीमाकर्ता कम से कम एक बीमाकर्ता द्वारा गारण्टीशुल्क न हो और उस विवेशी बीमाकर्ता का नाम, जिसका एक भी गारण्टीकर्ता न रखे, सूची में से निकाल दिया जाएगा।

36. विवेशी बीमाकर्ता का गारण्टीकर्ता:—(1) वह बीमाकर्ता, जो किसी विवेशी बीमाकर्ता की गारण्टी देना चाहता है, वह, इन नियमों की अनुसूची में विए गए प्रवप 'छ' में, उसके लिए केन्द्रीय सरकार को आवेदन करेगा।

(2) केन्द्रीय सरकार, यदि उसका संमाधान हो जाए तो उपनियम (1) में विविष्ट आवेदन ठीक है और यह समावीन है कि विवेशी बीमाकर्ता

को अनुमोदित सूची में रखा जाए, या जहां विवेशी बीमाकर्ता का नाम पहले ही अनुमोदित सूची में सम्मिलित है यह बीमाकर्ता-को अनुमोदित सूची में विवेशी बीमाकर्ता के गारण्टीकर्ता के रूप में जोड़ा जाना चाहिए, विवेशी बीमाकर्ता का नाम, यदि वह पहले ही सम्मिलित न हो तो, अनुमोदित सूची में जोड़ देंगे और बीमाकर्ता को उस विवेशी बीमाकर्ता के गारण्टीकर्ता के रूप में शामिल कर देंगे।

(3) वह गारण्टीकर्ता जो किसी विवेशी बीमाकर्ता की गारण्टी समाप्त कर देना चाहता है केन्द्रीय सरकार को कम से कम दो मास की सूचना (नीटिस) इन नियमों की अनुसूची में दिए गए प्रवप 'छ' में देगा और जहां ऐसी सूचना दी जा सकती हो वहां यह समझा जाएगा कि गारण्टीकर्ता ने सूचना में विविष्ट तारीख से, विवेशी बीमाकर्ता की गारण्टी समाप्त कर दी है।

परन्तु, ऐसी समाप्ति की तारीख से पूर्व, इन नियमों के नियम 30(2) के उपबंधों के अनुसार पृष्ठांकित या भवीकृत विवेशी बीमा के सभी प्रमाणपत्रों की बाबत यह समझा जाएगा कि जिस विवेशी बीमाकर्ता ने प्रमाणपत्र दिया है, उसका वह अभी भी वैसे ही गारण्टी बना हुआ है, मानो गारण्टीकर्ता ने उसका गारण्टीकर्ता रहना बन्द न किया हो।

(4) यदि किसी समय की गारण्टीकर्ता बीमाकर्ता नहीं रह जाता है तो केन्द्रीय सरकार, ऐसी सूचना देने के पश्चात् जो उसे प्रावश्यक प्रतीत हो, अनुमोदित सूची में से उस गारण्टीकर्ता का नाम, जहां कहीं वह आया हो, निकाल देगा।

परन्तु, जो गारण्टीकर्ता बीमाकर्ता नहीं रह जाता है, उसके बारे में अनुमोदित सूची में से गारण्टीकर्ता का नाम हटाए जाने की तारीख से पूर्व इन नियमों के नियम 37 के उपनियम (2) के उपबंधों के अनुसरण में पृष्ठांकित विवेशी बीमे के सभी प्रमाणपत्रों की बाबत यह समझा जाएगा कि वह विवेशी बीमाकर्ता का अभी भी उसी प्रकार गारण्टीकर्ता बना हुआ है मानो गारण्टीकर्ता ने बीमाकर्ता होना बन्द न किया हो और मानो उसका नाम सूची में से न निकाला गया हो।

37. विवेशी बीमा के प्रमाणपत्र का पृष्ठांकन:—(1) वह आगंतुक, जो विवेशी बीमे के प्रमाणपत्र का पृष्ठांकित या पुनः पृष्ठांकित करवाना चाहता है, इन नियमों के अनुसूची में विए गए प्रवप 'छ' में उस प्रमाणपत्र की, सीमाशुल्क छाँकी के प्रवेश स्थान पर बीमा शुल्क नियंत्रक के या केन्द्रीय सरकार द्वारा राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियुक्त किसी अन्य अधिकारी के सामने, इन नियमों के उपबंधों के अनुसरण में पृष्ठांकन के प्रयोजनार्थ या इन नियमों के अनुसरण में उस प्रमाणपत्र पर पहले ही किए गए किसी पृष्ठांकन के नवीकरण के प्रयोजनार्थ, प्रस्तुत करेगा।

(2) ऐसा अधिकारी, यदि उसका समाधान हो जाए कि विवेशी बीमे का प्रमाणपत्र इन नियमों की अपेक्षाओं के अनुसार है, कि भारत में उस प्रमाणपत्र की विविमान्यता: प्रवधि समाप्त मही हुई है कि वह प्रमाणपत्र में अनुमोदित सूची में किसी विवेशी बीमाकर्ता द्वारा जारी किया गया है और यह कि प्रमाणपत्र में विविष्ट गारण्टीकर्ता अनुमोदित सूची में विवेशी बीमाकर्ता के गारण्टीकर्ता के रूप में वर्णित है तो इन नियमों की अनुसूची में विए गये प्रवप 'ज' में पृष्ठांकन करेगा।

(3) पृष्ठांकन यथापूर्वौक्त पृष्ठांकन के नवीकरण की विविमान्यता प्रवधि किसी भी दशा में उस तारीख के बाद तक नहीं बदाई जाएगी जिसका कि विवेशी बीमे का प्रमाणपत्र भारत में प्रभावी नहीं रह जाता, परन्तु जब कोई आगंतुक, भारत में प्रवने रहने की अवधि के द्वारा विवेशी बीमे का नया प्रमाणपत्र प्रभिप्राप्त कर लेता है तब उस पर किए गए पृष्ठांकन (नां) वी विविमान्यता की प्रवधि भीर भूल प्रमाणपत्र पर किए गए पृष्ठांकन (नां) वी विविमान्यता की प्रवधि दोनों विवाकर कुल एक वर्ष से अधिक नहीं होगी।

38. विदेशी भीमे के प्रमाणपत्र की विधिमान्यता :—विदेशी भीमे के प्रमाणपत्र का, जिस पर नियम 37 के उपर्योगों के भनुसार पूँछांकन है, ऐसा प्रभाव होगा मानो कि वह उसमें विनिविष्ट गारण्टीकर्ता द्वारा जारी किया गया प्रमाणपत्र हो। और यह समझा जायेगा कि वह अधिनियम के प्रधाय 4-क की अपेक्षाओं के भनुपालन में है, उस पालिसी के बारे में भी, जिससे वह सम्बन्धित है यह समझा जायेगा कि वह गारण्टीकर्ता द्वारा जारी की गयी है, तथा अधिनियम के प्रधाय 6-क की अपेक्षाओं के भनुपालन में है।

39. गारण्टीकर्ता द्वारा अभिलेख रखा जाना :—प्रत्येक गारण्टीकर्ता, उस विदेशी बीमाकर्ता द्वारा जिसकी उसने गारण्टी भी है, उसकी गारण्टी के अस्तर्गत जारी किये गये विदेशी भीमे के प्रमाणपत्रों की बाबत, और प्रत्येक अधिक, जो गारण्टीकर्ता नहीं रह गया है, विदेशी बीमाकर्ताओंद्वारा जिसकी उसने पूर्ववर्ती पाल बचों में किसी भी समय गारण्टी भी है उसकी गारण्टी के अस्तर्गत जारी किये गये प्रमाणपत्रों के बाबत, उन पालिसियों की, जिनके संबंध में विदेशी भीमे के प्रमाणपत्र जारी किये गये थे, ऐसी विधिविषयों के अभिलेख रखेगा जिसके अभिलेख पालिसियों की बाबत बीमाकर्ताओं द्वारा रखेगा इन नियमों के नियम 11 के उपर्योगों के अधीन अपेक्षित है, और उन अभिलेखों में, उन्हें अधिकतम बनाने के लिये अपेक्षित संबंध, उन परिस्थितियों में युक्तियुक्त क्षय से सम्बद्ध यात्रतासाम्य जीव दिया जायेगे।

भनुपाल  
प्रकल्प-क

(भारत)

प्रत्येशीय जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1)

बीमा प्रमाणपत्र

(नियम 4 वेक्षिये)

प्रमाणपत्र सं० पालिसी सं०

(वैकल्पिक)

1. बीमाकृत यंत्र नोटिट अंतर्वेशीय जलयानों का रजिस्ट्रीकरण चिह्न और संख्या या विवरण
2. बीमाकृत का नाम और पता
3. अधिनियम के प्रयोजनार्थ भीमे के प्रारंभ की प्रभावी तारीख
4. भीमे के प्रवसान की तारीख
5. नौ संचालन के हकदार अधिकता या अधिकारों के प्रबन्ध
6. उपयोग की बाबत परिसीमाएं

मैं/ हम प्रमाणित करता हूँ/ करते हैं कि वह पालिसी जिससे यह प्रमाण पत्र संबंधित है और यह भीमा प्रमाणपत्र भी, मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) के प्रधाय 8 के उपर्योगों के भनुपाल जारी किया गया है।

(प्राधिकृत बीमाकर्ता)

(भारत)

प्रकल्प-क

प्रत्येशीय जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1)

प्रावरक टिप्पण

(नियम 4 वेक्षिये)

1. बीमाकृत जलयानों का रजिस्ट्रीकरण चिह्न और संख्या या विवरण
2. बीमाकृत का नाम और पता
3. अधिनियम के प्रयोजनार्थ भीमे के प्रारंभ की प्रभावी तारीख
4. भीमे के प्रवसान की तारीख

5. भी संचालन के हकदार अधिकता या अधिकारों के प्रबन्ध

6. उपयोग की बाबत परिसीमाएं

प्रकल्प-क

इस प्रावरक टिप्पण की विधिमान्यता-अधिकृति \_\_\_\_\_ को समाप्त हो जाएगी।

(प्राधिकृत बीमाकर्ता)

इस प्रावरक टिप्पण की विधिमान्यता-अधिकृति \_\_\_\_\_ को समाप्त हो गई थी, \_\_\_\_\_ तक और बढ़ाई जाती है।

(प्राधिकृत बीमाकर्ता)

इस प्रावरक टिप्पण की विधिमान्यता अधिकृति जो \_\_\_\_\_ को समाप्त हो गई थी, \_\_\_\_\_ तक बढ़ाई जाती है।

(प्राधिकृत बीमाकर्ता)

इस प्रावरक टिप्पण की विधिमान्यता अधिकृति जो \_\_\_\_\_ को समाप्त हो गई थी, \_\_\_\_\_ तक बढ़ाई और जाती है।

(प्राधिकृत बीमाकर्ता)

प्रकल्प-क

(भारत)

प्रत्येशीय जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1)

(नियम 11 वेक्षिये)

प्रमाणित किया जाता है कि निम्नलिखित विवरण के यंत्र नोटिट अंतर्वेशीय जलयान :—

(क) रजिस्ट्रीकरण हैं।

(ख) विनियमाता

(ग) वर्ग अधिकार कार्यालय, स्टीमर, सांच, स्वतः चालित बजरा, डेजर फैरी जलयान या स्पोरा जलयान या अन्य वर्ग (विवरण दिया जाएगा)

(घ) विनियोग

समुद्रीअधिकृत—एल० घो० ए०—भी० घो० ए०—ड्रापट से जाने की क्षमता

(ः) कागिक रंग

निम्नलिखित की सम्भिति है :—

(i) \_\_\_\_\_ भी सरकार

(ii) स्थानीय प्राधिकारी/ राज्य अंतर्वेशीय जल परिवहन उपकरण, अर्थात्

जिसके यंत्र नोटिट अंतर्वेशीय जलयानों को, \_\_\_\_\_ का सरकार द्वारा उनके प्रावे

सं० \_\_\_\_\_ तारीख \_\_\_\_\_ द्वारा मोटर यान अधिनियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 94 (3) के

अधीन छूट वी गई है।

यह प्रमाणपत्र \_\_\_\_\_ तक विधिमान्य है, जब तक कि उसे उस दौरान रहने कर दिया गया हो।

\_\_\_\_\_ प्राविधिकार की ओर से हस्ताक्षरित तारीख \_\_\_\_\_

## प्रधान

मन्त्रदेवशीय जलयात्रा प्रधानियम, 1917 (1917 का 1)

(नियम 25 वेदिये)

प्रमाणित किया जाता है कि \_\_\_\_\_ ने मन्त्रदेवशीय जलयात्रा (पर अधिकारी वीमा) नियम, 1978 और मोटर यात्रा प्रधानियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उप-धारा (1) के बंद (क) के प्रधान नियमित नियमों के लिए जाने के लिए आवेदन करता है।

(नियंत्रक प्राधिकारी)

## मनुमोदित, प्रतिभूतिया

नकद	टिप्पणी				
	श्रृंखला	अंकित मूल्य	बाजार मूल्य	श्रृंखला	टिप्पणी
1	2	3	4	5	6

योग

स्तम्भ 2 और पांच का कुल योग :

## प्रधान

मन्त्रदेवशीय जलयात्रा प्रधानियम, 1917 (1917 का 1)

(नियम 25 वेदिये)

सं०

मोटर यात्रा प्रधानियम, 1939 (1939 का 4) की धारा 108 की उप-धारा (1) के बंद (क) के प्रधान \_\_\_\_\_ की ओर से पूर्ण नियमों की विशिष्टियां वर्णित करने वाला विवरण \_\_\_\_\_

श्रृंखला नियमों को प्राप्त योग  
(जिसमें निकाले गए नियमों का सामना नहीं है) :

अंकित मूल्य बही मूल्य अंकित मूल्य बही मूल्य अंकित मूल्य बही मूल्य

कुल नकदी

कुल योग

प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त विशिष्टियां नियमित द्वारा रखी गई बहियों में की प्रविष्टियों से मेल आती हैं।

(धारक प्राधिकारी)

को।

## प्रधान

[नियम 36(1) वेदिए]

मन्त्रदेवशीय जलयात्रा प्रधानियम, 1917 (1917 का 1) विवेशी वीमाकर्ता के मनुमोदनार्थ प्रावेदन

मैं/हम \_\_\_\_\_ में गठित/नियमित प्रधानवित्तन-\_\_\_\_\_ के

(विवेशी वीमाकर्ता का नाम) के, मन्त्रदेवशीय जलयात्रा (पर अधिकारी वीमा) नियम, 1978 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार द्वारा रखी जाने वाली मनुमोदित सूची में सम्मिलित किए जाने और उक्त नियमों द्वारा मन्त्रदेवशीय जलयात्रा प्रधानियम, 1917 (1917 का 1) के प्रधान उपचाय 6 के प्रयोजनार्थ उक्त (विवेशी वीमाकर्ता का नाम) के गारंटीकर्ता के

काम में अपना नाम सम्मिलित किए जाने के लिए आवेदन करता है/करते हैं मैं/हम प्रमाणित करता है/करते हैं कि मैंने/हमने, उक्त विवेशी वीमाकर्ता के साथ उक्त प्रधानियम और उक्त नियमों के प्रयोजनार्थ एक करार किया है तथा मैं/हम, उक्त प्रधानियम और उक्त नियमों के प्रयोजनार्थ, उक्त विवेशी वीमाकर्ता की ओर से भारत में गारंटीकर्ता के काम में कार्य करने के लिए सहमत हूँ/हैं।

(प्राविकृत वीमाकर्ता के हस्ताक्षर)

तारीख \_\_\_\_\_

पता:

## प्रधान

(नियम 37 वेदिये)

विवेशी वीमा प्रमाणपत्र

प्रमाणपत्र सं० \_\_\_\_\_ पालिसी सं० \_\_\_\_\_ (वैकल्पिक)

1. मनुमोदित विवेशी वीमाकर्ता का नाम और पता
2. गारंटीकर्ता का नाम और पता
3. यक्ष नोवित मन्त्रदेवशीय जलयात्रा का रजिस्ट्रीकरण विल्ह और संख्या
4. ग्रामन्तुक का नाम और पता
5. पालिसी के प्राप्त की तारीख
6. पालिसी की समाप्ति की तारीख
7. भारत में बालन के हकदार अधिकार अधिकारियों के प्रबन्ध
8. भारत में उपयोग की ओर से कोई परिसीमाएं
9. उन अन्य जलयात्रों का व्योरा जिन्हें भारत में बालन के लिए विवेशी ग्रामन्तुक हकदार है और इस सम्बन्ध में कोई परिसीमाएं

मैं/हम प्रमाणित करता हूँ/करते हैं कि यह विवेशी वीमा प्रमाणपत्र, मन्त्रदेवशीय जलयात्रा (पर अधिकारी वीमा) नियम, 1978 और मन्त्रदेवशीय जलयात्रा प्रधानियम, 1971 (1971 का 1) के अध्याय 6 के उपबंधों के प्रत्युत्तर जारी किया गया है।

(मनुमोदित विवेशी वीमाकर्ता)

(भारत)

## प्रधान

(नियम 37 वेदिए)

मन्त्रदेवशीय जलयात्रा प्रधानियम, 1917 (1917 का 1)

विवेशी वीमा प्रमाणपत्र पर पृष्ठांकन

प्रमाणित किया जाता है कि आज मैंने विवेशी वीमा प्रमाणपत्र की परीक्षा कर ली है और मेरा यह समाधान हो गया है कि यह प्रमाणपत्र मन्त्रदेवशीय जलयात्रा (पर अधिकारी वीमा) नियम, 1978 और मन्त्रदेवशीय जलयात्रा प्रधानियम, 1917 (1917 का 1) के अध्याय 6 की अपेक्षाओं के प्रत्युत्तर में है।

इस पृष्ठांकन की विविध मान्यता की मरम्मि \_\_\_\_\_ को समाप्त होगी, जब तक कि वह इस दोरन रद्द न कर दी गयी हो।

तारीख \_\_\_\_\_ (सक्षम प्राधिकारी के हस्ताक्षर और पदाधिकार)

इस पृष्ठांकन की विविध मान्यता की मरम्मि नवीकृत की जाती है।

तारीख \_\_\_\_\_

तारीख \_\_\_\_\_

तारीख \_\_\_\_\_

जब तक कि वह इस दोरन रद्द न कर दी गयी हो।

(सक्षम प्राधिकारी के हस्ताक्षर और पदाधिकार)

## प्रलेप ख

[नियम 36 (3) विविध]

प्रन्तर्देशीय जलयान प्रधिनियम, 1917 (1917 का 1)

सूचना दी जाती है कि मैं/हम, प्रन्तर्देशीय जलयान प्रधिनियम 1917 (1917 का 1) के प्रभावाय 6-क और प्रन्तर्देशीय जलयान (पर व्यक्ति वीमा) नियम, 1978 के प्रयोजनार्थ के पश्चात ये उस तारीख से दो मास की समाप्ति से, जिसकी सूचना केन्द्रीय सरकार को परिवर्तन कर दी गई है, जो भी बाब में हो (विदेशी वीमाकर्ता का नाम) (विदेशी वीमाकर्ता का पता) का भारत में गारण्टीकर्ता नहीं रहना चाहता/चाहते।  
तारीख (प्राधिकृत वीमाकर्ता)

[मिसिल सं. 27-प्राई० डब्ल्यू० टी० (1)/78 पी० ए० डब्ल्य०]  
बी० बी० महाजन, संयुक्त समिति

## MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(I.W.T. Directorate)

New Delhi, the 6th October, 1978

## NOTIFICATION

**G.S.R. 495(E).**—The following Draft of certain rules which the Central Government proposes to make in exercise of the powers conferred by section 111 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939), read with Section 54C of the Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917), is hereby published as required by section 74 of the said later Act, for the information all persons likely to be affected thereby and notice is hereby given that the said Draft will be taken into consideration on or after the expiry of the period of fortyfive days from the date of publication of this notification in the Official Gazette.

Any objection or suggestion, which may be received from any person with respect to the said Draft before the expiry of the said period, will be considered by the Central Government.

## DRAFT RULES

## PART I

1. Short title, extent and commencement.—(1) These rules may be called the Mechanically Propelled Inland Vessels (Third Party Insurance) Rules, 1978.

(2) They extend to the whole of India except the State of Jammu & Kashmir.

(3) They shall come into force on the 1st December, 1978.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

(i) "accounting year" means the year commencing on the first day of April, and ending with the 31st day of March of the following year;

(ii) "Act" means the Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917);

(iii) "Authority" means the Central Government or a State Government or any local authority or any State Water Transport Undertaking providing inland water transport service, where such Undertaking is carried on by—

(i) the Central Government or a State Government, or

(ii) any local authority or any corporation or company owned by the Central Government or one or more State Governments or by the Central Government and one or more State Governments whose mechanically propelled vessels have been exempted from a policy insurance under sub-section (3) of Section 94 of the Motor Vehicles Act, 1939.

(iv) "Bank" means a company which accepts, for the purpose of lending or investment, deposits of money from the public repayable on demand or otherwise, and withdrawable by cheque, draft, order or otherwise;

(v) "Fund" means the fund established under rule 15;

(vi) "Government security" means a Government security as defined in the Public Debt Act, 1944 (18 of 1944);

(vii) "insurer" means an authorised insurer as defined in clause (a) of section 93 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939);

(viii) "policy" means a policy of insurance in respect of third party risks, arising out of the use of mechanically propelled vessels which complies with the requirements of Chapter VIA of the Act, and includes a cover note.

3. Certificates of insurance.—An insurer shall issue to every holder of a policy, other than a cover note, issued by the insurer;

(a) in the case of a policy relating to a specified vessel or to specified vessels a certificate of insurance in Form A set out in the Schedule to these rules in respect of each such vessel.

(b) in the case of a policy not relating to any specified vessel or vessels such number of certificates in Form A set out in the Schedule to these rules as may be necessary, so as to ensure compliance with the requirements of section 106 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) and of these rules as to the production of evidence that a mechanically propelled vessel is not being operated in contravention of section 94 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939).

4. Cover notes.—(1) Every policy in the forma cover note issued by an insurer shall be in Form B set out in the Schedule to those rules.

(2) A cover note referred to in sub-rule (1) shall be valid for a period of fifteen days from the date of its issue. If for any reasons, the insurer is not able to issue a policy during that period, the validity of the cover note shall be extended for a further period of fifteen days at a time but in no case the total period of validity of a cover note shall exceed two months.

5. Issue of certificates and cover notes.—(1) Every certificate of insurance or cover note issued by an insurer in compliance with these rules shall be duly authenticated by or on behalf of the insurer by whom it is issued.

(2) The certificate of insurance aforesaid shall be issued—

(a) in case of policies which are in force on the 1st December, 1978 on or before that date,

(b) in any other case on or before the date on which the policy is issued or renewed.

6. Exclusion of advertising matter.—No certificate of insurance or cover note issued in pursuance of Chapter VI-A of the Act and of these Rules shall contain any advertising matter either on the face or on the back thereof :

Provided that the name and address of the insurer by whom a certificate is issued, or a reproduction of the seal of the insurer, or any monogram or similar device of the insurer or the name and address of an insurance agent or broker shall not be deemed to be advertising matter for the purposes of this Rule if it is printed or stamped at the feet or on the back of such certificate or cover note.

7. Certificate or cover notes lost, destroyed or mutilated.—

(1) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2) of rule 5, where the holder of a policy—

(a) lodges with an insurer a declaration in which he declares that a certificate of insurance or cover note issued to him by such insurer has been lost or destroyed and sets out full particulars of the circumstances connected with the loss or destruction of the certificate or cover note and the efforts made to find it ; or

- (b) returns to the insurer the certificate of insurance or cover note issued to him by such insurer in a defaced or mutilated condition ; and
- (c) Pays to the insurer a fee of Rs. 3 in respect of each such certificate or cover note :

the insurer shall, if reasonably satisfied that such certificate or cover note has been lost and that all reasonable efforts have been made to find it out, or that it has been destroyed or is defaced or mutilated, as the case may be issue in lieu thereof another certificate of insurance or cover note which shall be plainly endorsed to the effect that it is a duplicate certificate or cover note, as the case may be, issued in place of the original.

(2) When a fresh certificate or cover note has been issued in accordance with the provisions of sub-rule (1) on representation that a certificate or cover note has been lost, and the original certificate or cover note is afterwards found it shall be delivered to the insurer.

8. Surrender of certificate or cover note.—Every certificate of insurance or cover note surrendered to the insurer in pursuance of the provisions of sub-section (1) of section 104 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) shall be defaced or destroyed by the insurer forthwith after making a record of such defacement or destruction in the records maintained in pursuance of rule 10 of these rules.

9. Cancellation or suspension of certificate or cover note.—When a policy of insurance or cover note is cancelled or suspended by an insurer the insurer shall forthwith inform the policy holder of such cancellation or suspension, by post to the latest address of the policy holder recorded in the records of the insurer.

10. Records to be maintained by insurers.—Every insurer shall keep a record of the following particulars in respect of every policy issued by him which is in force and of every other policy issued by him during the preceding five years:—

- (i) Full name and address of the person to whom the Policy is issued,
- (ii) In the case of a policy relating to a specified mechanically propelled vessel or vessels, the registration mark and the number of each such vessels and in other cases description of the vessels covered,
- (iii) The date on which the Policy comes, or came into force and the date on which it expires or expired,
- (iv) The conditions subject to which the persons or classes of persons specified in the policy will be indemnified,
- (v) The number and date of issue of every certificate of insurance or cover note issued in connection with the policy,
- (vi) The date, if any, on which any certificate of insurance or cover note issued in connection with the policy was surrendered or cancelled,
- (vii) The date, if any, on which, and the reasons for which, the policy was terminated or suspended by any means before its expiry by efflux of time.

#### 11. Exemption

(1) In the case of a mechanically propelled vessel owned by any of the authorities specified in sub-section (2), or exempted under sub-section (3) of section 94 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939), a certificate in Form C set out in the schedule to these rules signed by a person authorised in that behalf by such authority may be produced in evidence that the mechanically propelled vessel is not being operated in contravention of section 94 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939).

(2) Any certificate issued in accordance with sub-rule (1) of this rule shall be destroyed by the person by whom it was issued before the mechanically propelled vessels to which it relates is sold or otherwise disposed off.

12. Records of exempted vessels.—Every authority referred to in sub-section (2), under section (3) of Section 94 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) shall keep a record of the mechanically propelled vessels owned by it in respect of which a policy has not been obtained, and of any, certificates issued by it under these provisions in respect of such vessels and of the names and addresses of the person to whom such certificates have been issued by it, and of the withdrawal or destruction of any such certificates.

13. Supply of information.—Any person, authority or insurer required by these rules to keep records of documents shall furnish without charge to the Central Government or a State Government or to any police officer authorised in this behalf by the State Government on request any particular thereof.

14. Fee for production of information.—The fee to be paid in return for the production of information by a Registering Authority or the officer in-charge of a police station under section 109 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) shall be Re. 1.

## PART II

### Establishment of fund by authorities

15. Establishment of the Fund.—The authority may at any time establish a Fund for meeting any liability arising out of the use of any mechanically propelled vessel of that Authority which that Authority or any person in its employment may incur to third parties including liability arising under the Workmen's Compensation Act, 1923.

16. Amount of the Fund.—(1) The Fund shall be established with an initial amount of not less than rupees five lakhs. The amount shall be kept in deposit with the bank.

(2) Subject to the provisions of sub-rule (3), the Authority shall pay into the Fund at the beginning of each accounting year in respect of its mechanically propelled vessels in a running condition, a sum of Rs. 500 per vessel.

Explanation.—In this sub-rule "mechanically propelled vessel in a running condition" shall mean all the mechanically propelled vessels of the authority which are expected to be in operation at any time during the accounting year.

(3) When the Fund exceeds rupees sixty lakhs or Rs. 7500 per mechanically propelled vessel for the entire fleet of mechanically propelled vessels whichever is less, the annual payment referred to in sub-rule (2) shall cease provided that if thereafter a amount at the credit of the Fund falls below rupees sixty lakhs or Rs. 7500 per mechanically propelled vessel for the entire fleet of Inland Vessels whichever is less, such annual payment shall again be resumed.

17. Investment of the Fund.—From the amount at the credit of the Fund the Authority shall keep and maintain a cash deposit of not less than rupees two lakhs and fifty thousand in the Bank. The rest of the amount at the credit of the Fund shall be invested in Government securities.

18. Securities held as deposit in the Fund.—(1) All Government securities in which the Fund is invested shall be transferred to the Bank by the Authority.

(2) It shall be competent for the Authority at any time to exchange the Government securities for cash or for other Government securities of equal or greater market value, or both, and the bank shall carry out the instructions issued by the Authority for such exchange after charging the usual commission to the Authority. The securities so exchanged shall also be transferred to the Bank.

19. Deposits procedure.—(1) As soon as the Fund is established the Bank shall send to the Authority a statement specifying the assets held by it on behalf of the Authority and shall also send a copy thereof to the Central Government in the Ministry of Shipping and Transport (Inland Water Transport Directorate) or the State Government concerned, as the case may be.

(2) The statement referred to in sub-rule (1) shall be sent in the same manner and to the same authorities whenever there is a change in the assets of the Authority held by the Bank.

20. Interest on deposit in the Fund.—Interest realised on each deposits or the securities held in the Fund shall be said by the Bank to the Authority.

21. Withdrawal from the Fund.—(1) No amount shall be withdrawn from the Fund except for the purpose of meeting any liability arising out of the use of any mechanically propelled vessels of the Authority which the Authority or any person in the employment of the Authority may incur to third parties including liability arising under the Workmen's Compensation Act, 1923.

(2) The Authority shall, subject to such conditions and restrictions as it may impose in this behalf, authorise one of its officers to draw monies from the Fund for the purpose mentioned in sub-rule (1).

(3) A copy of the authorisation referred to in sub-rule (2) duly authenticated by a competent officer of the Authority shall be sent to the Bank which shall permit withdrawals only by the officer named in such authorisation subject to the conditions and restrictions contained therein.

22. Settlement of Claims Procedure.—The Authority shall comply with such directions as the Central Government or the State Government concerned, as the case may be, may from time to time issue, with respect to the procedure to be followed for settlement of claims which are to be met out of the Fund.

## PART-II—CO-OPERATIVES INSURANCE

23. Definitions.—In this Part of these rules,—

(i) "approved securities" means approved securities as defined in sub-section (3) of section 2 of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);

(ii) "Controller of Insurance" means the person for the time being performing the functions of the Controller of Insurance under the provisions of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);

(iii) "holding authority" means in relation to a society the authority in whose custody the fund established under clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) is to be lodged.

(iv) "Society" means a society of mechanically propelled vessel owners which has been permitted under the provisions of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) to transact the business of an insurer for the purposes of the Act.

24. Co-operative Insurance Fund.—The fund required to be established in terms of clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) shall be held in the form of a deposit made either in cash or in approved securities or partly in cash and partly in approved securities and the amount of approved securities so held shall be estimated at the market value of the securities on the date of the deposit :

Provided that where a deposit held under the Insurance Act, 1938, is transferred to the holding authority in pursuance of Rule 31 of these rules, the date of the deposit shall, in the case of approved securities so transferred, be deemed to be the date of such transfer.

25. Deposits—Procedure.—(1) Deposits shall be sent by the society with a covering letter to the holding authority.

(2) Securities shall be duly transferred to the holding authority by the society.

(3) Upon receipt of a deposit under sub-rule (1) of this rule, the holding authority shall send—

(a) a certificate in Form D to the society;

(b) a statement in Form E to such officer as may be specified by the State Government :

Provided that, if the holding authority is not satisfied as to the validity of the title of the society to the securities, he may return them to the society with the request that they shall first be renewed or that such other measures as may be necessary shall be taken to clear the title.

(4) The deposit made in cash shall be held by the holding authority to the credit of the society and shall except to the extent, if any, to which the cash has been invested in securities under sub-rule (6) of this rule be returnable to the society in cash in any case in which under the provisions of the Act or of these rules the fund is to be returned.

(5) The society may at any time replace any securities deposited by it under these rules with the holding authority either by cash or by other approved securities, or partly by cash and partly or by other approved securities.

Provided that such cash, or the value of such other approved securities estimated at the market rates prevailing at the time of replacement, or such cash together with such value as the case may be, is not less than the value of the securities replaced estimated at the market rates prevailing when they were deposited.

(6) The holding authority shall if so requested by the society,—

(a) sell any securities deposited by it with the holding authority under these rules and hold the cash realised by such sale as deposit, or

(b) invest in approved securities specified by the society the whole or any part of a deposit held by the holding authority in cash or the whole or any part of the cash received by him on the scale of or on the maturing of securities deposited by the society, and hold the securities in which investment is so made as deposit and may charge the normal commission on such sale or on such investment.

(7) Where sub-rule (6) of this rule applies.—(a) if the cash realised by the sale of, or on the maturing of the securities (excluding in the former case the interest accrued) falls short of the market value of the securities at the date on which they were deposited with the holding authority, the society shall make good the deficiency by a further deposit either in cash or in approved securities estimated at the market value of the securities on the date on which they are deposited, or partly in cash and partly in approved securities so estimated within a period of two months from the date on which the securities matured or were sold; and unless it does so the society shall be deemed to have failed to comply with the condition imposed under clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939; and

(b) if the cash realised by the sale of or on the maturing of the securities (excluding in the former case the interest accrued) exceeds the market value of the securities at the date on which they were deposited with the holding authority, the State Government may, if satisfied that the full amount required to be deposited under clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) is in deposit, direct the holding authority to return the excess.

26. Interest on securities held as deposit.—(1) No interest shall be paid on cash deposits.

(2) Any interest accruing due and collected on securities deposited under clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) and these rules shall be paid to the society subject only to deduction of the normal commission chargeable for the realization of interest.

(3) The holding authority shall remit interest or dividends on securities without delay to the society by a Government or bank draft after deduction of a commission of twenty five paise on every sum of Rs. 100 or part thereof.

27. Matured securities held as a deposit.—(1) When a security in deposit matures or when any yield on such a security ceases to accrue, the holding authority shall not be bound to inform the society but upon receipt of a requisition from the society made in writing the holding authority shall, within six weeks of such a receipt, collect the discharge value and hold the amount in cash to the credit of the society or invest it in securities specified by the society.

(2) When the form or amount of a deposit is changed by reason of a subsequent deposit or a substitution or a payment under sub-rule (5) of rule 18, or a sale or investment under sub-rule (6) of rule 18 of these rules, the holding authority shall, within two weeks from the entry of such change in the books of the holding authority, send a fresh certificate and a fresh statement of the nature and in the manner described in sub-rule (3) of rule 25 of these rules.

28. Payments from deposits.—(1) Withdrawals and payments from deposits and purchases of securities shall not be made save on the order of the State Government made in writing, and save on the receipt by the holding authority of a requisition in writing and in accordance with the provisions of the Act and of these rules from the society, a liquidator acting in accordance with law, or a court of competent jurisdiction, as the case may be.

(2) The holding authority shall not be bound in pursuance of sub-rule (1) to return securities actually deposited, but may substitute therefor new script of securities of the same description and amount.

(3) The holding authority shall be entitled to charge, for the purchase or sale of securities, any brokerage payable by the holding authority in respect of such purchase or sale.

29. Inspection of deposits.—Any officer authorised in this behalf by the State Government shall be entitled, free of any fee, to inspect or to require from the holding authority any information relating to any security deposited with the holding authority in terms of clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) and of these rules; and the holding authority shall if so required, furnish such officer with a copy of any entry in any register or book maintained by the holding authority relating to any deposit made with him in pursuance of the Act and of these rules.

30. Information to the Reserve Bank.—Where a society, to which permission is granted under sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) to transact the business of an insurer for the purposes of the Act as if it were an authorised insurer, is registered under the Insurance Act, 1938 at the time of the grant of such permission, the State Government shall intimate the grant of such permission, to the Reserve Bank of India and shall also intimate to that Bank all the conditions imposed by the State Government relating to the establishment of the fund referred to in clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) in relation to such society.

31. Transfer of deposit from Reserve Bank.—(1) A society as aforesaid shall apply in writing to the Reserve Bank of India for the transfer of the deposit made under section 7 or section 98 of the Insurance Act, 1938, held by the Reserve Bank to the holding authority and such application shall be duly authenticated and accompanied by the order in original of the State Government granting the society permission under sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) and containing the conditions, if any imposed by the State Government under clause (a) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) and an attested copy of such application and its enclosures shall also be sent to the Controller of Insurance.

(2) If from the application so made the Reserve Bank is satisfied that the society has been granted permission by the State Government under sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) the Reserve Bank shall transfer the deposit held by it under section 7 or section 98 of the Insurance Act, 1938 on behalf of the society to the holding authority subject to such conditions, if any, as may have been imposed by the State Government.

32. Information to the Controller of Insurance.—A State Government shall intimate to the Controller of Insurance every case of permission granted by it to a society to transact the business of an insurer for the purposes of the Act, and every case where such permission has been withdrawn or cancelled, and in every case where such permission has been granted, the State Government shall also furnish to the Controller of Insurance a copy of the documents referred to in clauses (a), (b) and (f) of sub-section (2) of section 3 and the particulars referred to in section 26 of the Insurance Act, 1938, in relation to such society so far as is applicable to such society :

Provided that in the case of societies which, at the time of grant of the permission by the State Government, have been registered under the Insurance Act, 1938 it shall be sufficient compliance with the requirements of this rule if the State Government furnishes to the Controller of Insurance the particulars referred to in section 26 of the Insurance Act,

1938, in respect of every alteration taking place after the date on which permission is granted to the society by the State Government.

33. Failure of a Society to comply with the provisions of the Act.—The Controller of Insurance shall intimate to the State Government concerned every case in which, from a perusal of the returns furnished to him by a society, he is of the opinion that the society has failed to comply with the requirements of either sub-clause (i) or sub-clause (ii) of clause (f) of sub-section (1) of section 108 of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939) or both.

#### PART-IV—FOREIGN INSURANCE

34. Definitions.—In this Part of these rules—

- (i) "Approved list" means the list of foreign insurers and their guarantors maintained by the Central Government under these rules.
- (ii) "Certificate of foreign insurance" means a certificate issued by a foreign insurer in Form 'G' in compliance with these rules.
- (iii) "Foreign insurer" means a person or firm carrying on business of insurance incorporated or domiciled outside India, and not registered under the Insurance Act, 1938.
- (iv) "Guarantor" means an insurer who has guaranteed a foreign insurer in pursuance of these rules, and "guaranteed", "guaranteed" and "guaranteeing" shall be construed accordingly.
- (v) "Visitor" means a person bringing a mechanically propelled vessel into India and making only a temporary stay therein not extending to a continuous period of more than one year.

35. List of foreign insurers.—(1) The Central Government shall publish in the Official Gazette an approved list of foreign insurers who have been guaranteed in accordance with these rules, together with the name of the guarantor or guarantors in each case and shall also publish any addition to or removal from the approved list.

(2) No foreign insurer's name shall be added to the approved list until such foreign insurer has been guaranteed by at least one insurer and the name of the foreign insurer who ceases to have at least one guarantor shall be removed from the list.

36. Guarantor of foreign insurer.—(1) An insurer who desires to guarantee a foreign insurer shall make application therefor to the Central Government in Form F set out in the Schedule to these rules.

(2) The Central Government may, if it is satisfied that the application referred to in sub-rule (1) is in order and that it is expedient that the foreign insurer be placed in the approved list, or where the name of the foreign insurer is already included in the approved list, that the insurer should be added to the approved list as a guarantor of the foreign insurer, the name of the foreign insurer shall be added to the approved list if it is not already included, and the insurer be included as a guarantor of such foreign insurer.

(3) A guarantor desiring to cease guaranteeing a foreign insurer shall give notice of not less than two months to the Central Government in Form I set out in the Schedule to these rules, and where such notice has been given the guarantor shall be deemed to have ceased to guarantee the foreign insurer from the date specified in the notice.

Provided that the insurer shall be deemed, in respect of all certificates of foreign insurance endorsed or renewed in accordance with the provisions of sub-rule (2) of rule 37 of these rules before the date of such cessation, to continue as the guarantor of the foreign insurer who has issued the certificate as if the guarantor had not ceased to be his guarantor.

(4) If at any time a guarantor ceases to be an insurer, the Central Government may, after giving such notice as may appear to it to be necessary, remove from the approved list the name of such guarantor wherever it appears :

Provided that the guarantor who ceases to be an insurer shall be deemed, in respect of all certificates of foreign insurance endorsed in pursuance of the provisions of sub-rule (2) of rule 37 of these rules before the date of removal of the name of the guarantor from the approved list, to continue as the guarantor of the foreign insurer as if the guarantor had not ceased to be an insurer and as if his name had not been removed from the list.

**37. Endorsement of certificate of foreign insurance.**—(1) A visitor wishing to have a certificate of foreign insurance endorsed or re-endorsed shall produce such certificate in Form G set out in the schedule to these rules before the Customs Controller at a post of entry of customs post or to such other officers as the Central Government may by notification in the Official Gazette appoint, for the purpose of endorsement in accordance with the provisions of these rules or for the purpose of the renewal of any endorsement already made on the certificate in accordance with these rules.

(2) Such officer shall, if satisfied that the certificate of foreign insurance complies with the requirements of these rules that the period of validity of such certificate in India had not expired, that the certificate has been issued by a foreign insurer in the approved list and that the guarantor specified in the certificate is shown in the approved list as a guarantor of the foreign insurer, make an endorsement thereon in form H set out in the schedule to these rules.

(3) The period of validity of an endorsement or of the renewal of an endorsement made as aforesaid shall not in any case be extended beyond the date on which the certificate of foreign insurance ceases to be effective in India; provided that when a visitor obtain a fresh certificate of foreign insurance during the period of his stay in India, the period of validity of an endorsement made upon it added to the period of validity of an endorsement or endorsements that may have been made upon the original certificate, shall not exceed one year in all.

**38. Validity of certificate of foreign insurance.**—A certificate of foreign insurance carrying an endorsement in accordance with the provisions of rule 37 shall have effect as if it were a certificate of insurance issued by the guarantor specified in it and shall be deemed to comply with the requirements of Chapter VIA of the Act; and the policy to which it relates shall also be deemed to have been issued by such guarantor and to comply with the requirements of Chapter VIA of the Act.

**39. Maintenance of records by the guarantor.**—Every guarantor shall, in respect of certificates of foreign insurance issued under his guarantee by the foreign insurer whom he has guaranteed, and every person who has ceased to be a guarantor shall, in respect of the certificates of foreign insurance issued under his guarantee by the foreign insurers whom he had guaranteed at any time in the preceding five years, keep a record of such particulars relating to the policies in connection with which the certificates of foreign insurance were issued as are required to be kept by insurers under the provisions of rule 11 of these rules in respect of policies, and the necessary additions to these records required to make them up-to-date shall be made as soon as is reasonably possible in the circumstance.

### THE SCHEDULE

#### FORM A (INDIA)

Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917)

Certificate of Insurance

(See rule 3)

Certificate No. Policy No. (Optional)

1. Registration mark and number, or description, of the mechanically propelled vessels insured
2. Name and address of insured.
3. Effective date of commencement of insurance for the purpose of the Act.
4. Date of expiry of insurance.
5. Persons or classes of persons entitled to navigate.
6. Limitations as to use.

I/We hereby certify that the policy to which this certificate relates as well as this certificate of Insurance are issued in accordance with the provisions of Chapter VIII of the Motor Vehicles Act, 1939 (4 of 1939)

(Authorised Insurer)

(India)

#### FORM B (INDIA)

Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917)

Cover Note

(See rule 4)

1. Registration mark and number, or description, of the vessels insured
2. Name and address of insured
3. Effective date of commencement of insurance for the purpose of the Act
4. Date of expiry of insurance
5. Persons or classes of persons entitled to navigate
6. Limitation as to use

The period of validity of this cover note will expire on

(Authorised Insurer)

The period of validity of this cover note which expired on ..... is further extended upto .....

(Authorised Insurer)

The period of validity of this cover note which expired on ..... is further extended upto .....

(Authorised Insurer)



4. Name and address of visitor.
5. Date of commencement of the policy.
6. Date of expiry of the policy.
7. Persons or classes of persons entitled to navigate in India.
8. Any limitations as to use in India.
9. Particulars of any other vessel(s) which the foreign visitor is entitled to operate in India and of any limitations in this connection.

I/We hereby certify that this certificate of foreign insurance has been issued in accordance with the provisions of Chapter VIA of the Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917) and the Inland Vessels (Third Party Insurance) Rules, 1978.

(Approved Foreign Insurer)  
(India)

FORM H

(See rule 37)

Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917)

Endorsement on certificate of foreign insurance

Certified that I have today examined this certificate of foreign insurance and that I am satisfied that this certificate complies with the requirements of Chapter VIA of the Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917) and the Inland Vessels (Third Party Insurance) Rules, 1978.

The period of validity of this endorsement will expire on unless cancelled in the meanwhile.

Date

(Signature and Designation of Competent Authority)

The period of validity of this endorsement is hereby renewed.

Upto

Upto

Upto

unless cancelled in the meanwhile.

(Signature and Designation of Competent Authority)

FORM I

(See rule 36(3))

Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917)

This is to given notice that I/we desire to cease acting as guarantors in India of \_\_\_\_\_ of \_\_\_\_\_ (name of foreign insurer) \_\_\_\_\_ (address of foreign insurer) after \_\_\_\_\_ or from the expiry of two months from the date on which this notice is delivered to the Central Government, whichever is later, for the purposes of Chapter VIA of the Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917) and the Inland Vessels (Third Party Insurance) Rules, 1978.

Dated the \_\_\_\_\_ day of 19

(Authorised Insurer)  
(File No. 27-IWT(1)/78-P&W1  
B. B. MAHAJAN, Jt. Secy.

